International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 25-06-020; Accepted: 10-07-2020; Published: 26-07-2020
Volume 2; Issue 3; 2020; Page No. 12-14

असफल दांपत्य जीवन तथा संघर्ष: अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में

आलपाटि भानु प्रसाद
हिन्दी प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, अवनिगड्डा, आन्ध्र प्रदेश, भारत

सारांश
व्यक्ति अपने जीवन में सुख तथा शांति परिवार के द्वारा ही प्राप्त कर लेता है। पारिवारिक सुख मनुष्यों के जीवन में अमृत फैलाता है। पर पारिवारिक तनाव तथा संघर्ष उसे विषैला बना देता है। भारतीय जीवन में विवाह बंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुखी तथा सुरक्षित जीवन के लिए स्त्री-पुरुष विवाह सूत्र में बंधकर आजीवन एक साथ मिलकर जीवन यापन करते हैं। दोनों एक दूसरे की रुचि तथा अरुचि, स्वभाव तथा सुविधा-असुविधा को समझकर सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं।

मूल शब्द: पारिवारिक जीवन, संघर्ष-चेतना, आत्मसमर्पण, अन्याय तथा अत्याचार

प्रस्तावना

पारस्परिक सहयोग के आधार पर बनाए गए संबंधों के जाल को समाज कहते हैं। समाज में रहनेवाले हर एक व्यक्ति दूसरों के साथ संबंध रखता है। आदमी कभी भी अकेला रह नहीं सकता। उसे अन्य व्यक्तियों की सहारा अत्यंत आवश्यक है। इस कारण हर एक आदमी दूसरों के साथ संबंध रख लेता है। समाज की प्रथम इकाई परिवार है। परिवार में रह कर ही व्यक्ति में सहानुभूति, प्यार, त्याग आदि मनोवैज्ञानिक एवं मानवीय गुणों का विकास होता है। मनुष्य परिवार में रह कर अपने सामने आने वाली मुसीबतों तथा समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। मानव का सर्वांगीण विकास परिवार के द्वारा ही होता है। शैशवावस्था से लेकर युवावस्था तक व्यक्ति का पालन-पोषण तथा संस्कार परिवार से ही प्राप्त कर लेता है। समाज व्यवस्था को जीवित रखना तथा उसका विकास करना परिवारों पर ही आधारित होता है।

“परिवार में पति-पत्नी का संबंध महत्वपूर्ण होते हैं। वे संबंध परिवार की आदर्श एवं विकसित पथ पर लाने के लिए आवश्यक होते हैं। भौतिक युग में इन परिवर्तन की सीमा तलाक तक आ पहुँची है। नारी जीवन में पति-पत्नी के संबंधों की पवित्रता नष्ट होती आ रही है। पति-पत्नी वैवाहिक जीवन में बंध जाते हैं, किन्तु कहीं-कहीं पति केवल वासनाग्रस्त हिंसक पशु नजर आता है। अतः नारी पति से दूर होकर दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आती है और उसी की हो जाती है।”1

पति-पत्नी के सफल दांपत्य से ही परिवार का विकास होता है। यह विकास एक-दूसरे के बिना अधूरा हो जाता है। पति और पत्नी दांपत्य के अविभाज्य अंग हैं। पत्नी के बिना पति एकाकी बनता है तथा पति के बिना पत्नी निराश्रित बन जाती है। पति-पत्नी के बीच स्नेहमय तथा सामंजस्यपूर्ण संबंध की आवश्यकता है। एक दूसरे के प्रति विश्वास, आदर तथा प्रेम की आवश्यकता है। पति-पत्नी में त्याग, बलिदान, आत्मसमर्पण, सहानुभूति, सद्भावना, वैचारिक एकता, ईमानदारी आदि गुण होने से ही उन दोनों का वैवाहिक जीवन यशस्वी तथा सफल हो जाता है। वास्तव में पति-पत्नी दोनों दो विभिन्न परिवार के सदस्य होते हैं। शादी के बाद दोनों मिलकर एक होकर अपना जीवन यापन करते हैं। जब पति-पत्नी के बीच सद्भावना कमी हो जाती है तब वह परिवार संघर्षों से भर जाता है। दांपत्य जीवन में किसी एक का दूसरे पर एक तंत्र शासन करने से दांपत्य जीवन की सरसता नष्ट हो जाती है तथा वह यंत्रचलित बन जाता है। निरंतर एकतंत्र शासन के कारण पति या पत्नी में संघर्ष उत्पन्न हो जाते हैं।

गृहस्थ जीवन प्रेम तथा माधुर्य से प्रेरित होता है। पति-पत्नी का पारस्परिक प्रेम ही इसका मूलाधार है। जिन दांपत्यों में प्रेम तथा माधुर्य नहीं होता उनका जीवन नरक के समान बन जाता है। मनुस्मृति में गृहस्थाश्रम को अन्य तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा सन्यास) का आधार माना गया।

पति-पत्नी संबंध में आपसी प्रेम की प्रमुख भूमिका है। यदि दोनों के बीच प्रेम होगा तो परिवार में सुख तथा शांति स्थापित होती है। प्रेम का उत्तर प्रेम ही होता है। प्रेम अमूल्य है, उसका प्रतिरूप दूसरा नहीं हो सकता। प्रेम को प्रेम से ही जीता जा सकता है। प्रेम-प्रेम के सामने ही झुकता है तथा कोई शक्ति उसे झुका नहीं सकती। प्रेम द्विपक्षीय होता है।

परिवार में पति-पत्नी ही मुख्य भूमिका निभाते हैं। जिस परिवार में पति-पत्नी के बीच प्रेम का अभाव है तो दोनों के बीच आपसी झगडे तथा तनाव पूर्ण वातावरण होता है। परिवार में हमेशा मार-पीट तथा गाली-गलौज का साम्राज्य होता है। सभी पारिवारिक वातावरण खराब होता है। पति-

पत्नी परिवार में सुख तथा चैन की सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। असफल दांप्त्य जीवन के कारण दोनों का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य बिगढ़ जाता है। परिवार में पति-पत्नी के बीच सामंजस्य का वातावरण न है तो पति शराबी बन जाता है तथा अन्य स्त्री का सहारा लेना चाहता है। उसके साथ पत्नी भी अन्य पुरुष के साथ संबंध स्थापित कर लेती है। जिस परिवार में माँ-बाप का रिश्ता सही होता है, उसके बच्चे भी सही रास्ते पर जाते हैं। यदि माँ-बाप का प्यार बच्चों को न मिलेगा तो वे समाज के लिए हानिकारक बन जायेंगे। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि समाज में गुंडे, चोर तथा अन्य समाज विनाशकारी व्यक्ति प्रायः अपने माँ-बाप के प्यार से वंचित है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में पारिवारिक संघर्षों के साथ-साथ असफल दांपत्य जीवन-संघर्ष का वर्णन मिलता है। जिस लेखक का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है, उस लेखक की कहानियों में संघर्षों की क्या कमी। कम उम्र में ही माँ-बाप को खो जाना, बंधुओं से चीत्कार आदि से बिस्मिल्लाह का बचपन संघर्षों से भरा हुआ है। वही संघर्ष आगे चलकर अपनी कहानियों का मुख्य विषय बन गया। उनकी 'जीनिया के फूल' कहानी संग्रह की कहानियों में असफल दांपत्य जीवन संघर्ष का वर्णन मिलता है। 'इन्द्रधनुष' कहानी में मनोहर तथा नंदिनी के माध्यम से असफल दांपत्य जीवन का चित्रण हुआ है। मनोहर हमेशा नंदिनी को बिना वजह से पीटता रहता है। उसकी हर काम में ग़लतियाँ देख लेता है तथा उसे डाँटता रहता है। खिड़कियाँ खोलने पर मनोहर कहता है कि- "रंडी, खिड़की में से नजर लड़ाती है।" दूसरे दिन नंदिनी खिड़कियाँ बंद कर दी थीं। मनोहर ने दूसरे दिन कहना शुरू किया था- "यह हरामजादी सबको मारना चाहती है। बाहर की हवा भी नहीं आने देती।"2 नंदिनी जब खाना बनाती है तब वह चौके में जाकर दाल में नमक की हांड़ी उंड़ेल देता है। उस दिन नंदिनी ने खाना नहीं खाया था, पर मनोहर अपने लिए दही ले आया था और खाकर लेट गया था। फिर न जाने क्या सूझा था उसे, कि उठकर सोई हुई नंदिनी को पीटने लगा था और तब तक पीटता रहा था, जब तक मुहल्ले वाले न आ गए थे। मनोहर के इस प्रकार की रुग्ण व्यवहार से नंदिनी ऊब जाती है और ससुराल छोड़कर मायके जाती है। पति-पत्नी के असफल दांपत्य जीवन उन दोनों में संघर्ष उत्पन्न होने का कारण बन जाती तथा पति को छोड़कर मायके जाने की चेतना नंदिनी में जगाती है। उसकी 'दंड' कहानी के नंदू तथा लखिया का दांपत्य जीवन भी संघर्षों से भरा हुआ है। लखिया के साथ गाँव के एक ब्राह्मण युवक छेड़छाड़ करता है। लखिया यह बात नंदू से बताती है। पर नंदू उसे ही डाँटता है। "लखिया ने नन्दू के पैरों को दोनों हाथों से पकड़कर सिर्फ इतना ही कहा था, तुम्हीं बताओ, इसमें मेरा क्या कसूर है ? और फूट पड़ी थी।"3

लेकिन आगले क्षण लखिया दूर जा गिरी थी। नंदू ने उसके चेहरे पर लात मार दी थी और बेतहाशा चीखने लगा था- "कसूर है कैसे नहीं। सारा कसूर तुम्हारा है। औरत क्या नहीं कर सकती ? देखती नहीं, सूनीमा की औरतें अपना बचाव कैसे करती हैं ? तुम उसे मुक्कों से मार नहीं सकती थीं ? वहाँ कोई लकड़ी वगैरह जरूर रही होगी, उससे वार नहीं कर सकती थीं ? फिर तुम चिल्ला तो सकती ही थीं। मैं कुछ नहीं जानता, इसमें सारा कसूर तुम्हारा है। तुम यहाँ से तुरन्त चली जाओ। यहाँ तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है।" 4 नंदू हमेशा लखिया पर ही संदेह करता है। क्यों कि लखिया दिखने में बहुत सुंदर है। नंदू हमेशा उस पर उखड़ता है तथा लातों, पूसों से पीटता रहता है। पर लखिया चुपचाप सहती रहती है। वह कुछ न बोलतीं। नंदू सिर्फ रात में लखिया को पाने के लिए उससे ठीक बातें करता है। उसे सिर्फ लखिया के जिस्म पर ही प्यार है। इसलिए नंदू हमेशा शक करता रहता है।

यदि पति अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करता है, तो पत्नी के अंतर्मन को ठेंस पहुंचती है। आखिर लखिया नंदू से कहती है कि – "मुझ पर तुम नाहक शक करते हो..... कहो तो नहीं जाऊँगी, अब से। तुम जो कहो, करने का तैयार हूँ..मुझ से नफरत है तो मार डालो मुझे..मगर ऐसा दंड न दो कि.देखो, मेरे पेट में दर्द होने लगा है..बच्चे को कुछ हो गया तो ..।"5

दांपत्य जीवन में कभी-कभी दहेज के कारण भी संघर्ष होता रहता है। मीरा के पिता ने शादी के वक्त सुधाकर को स्कूटर खरीदकर देने का वादा करता है, पर उसे निभाने में असफल हो जाता है। इस कारण पति-पत्नी के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाते हैं। सुधाकर अपने आपको सही मानते हुए मीरा से कहता है - "दरसल तुमने आज तक मुझे समझा ही नहीं। यह सरासर मेरा अपमान है। मैं इसे कतई बर्दाशत नहीं कर सकता। मेरी समझ में नहीं आता फिर इसकी आखिर जरूरत क्या थी।"6 पर मीरा तुरंत उत्तर देती है कि "जरूरत का पता उस दिन चलेगा, जिस दिन आप भी पिंकी के लिए लड़का ढूँढ़ने निकलेंगे।"7

'एहसास' कहानी में कथानायक तथा रेखा के बीच अक्सर झगड़ा होता रहता है। रेखा घर की काम-काज को ठीक तरह न करती। रसोई घर में प्याज के छिलके तथा सब्जी की कतरनें फेंक देती है। सोफे पर अंडरवियर सूखने को डाल देती है। इस कारण अक्सर रेखा तथा उसके पति के बीच झगड़ा होता है। निवेदक कहता है कि- "दरअसल तुम मेरे योग्य नहीं हो। न ही मैं तुम्हारे योग्य हूँ। प्लीज, तुम यहाँ से चली जाओ। मुझ पर रहम खाओ।" 8 पर रेखा खामोश रहती है तथा बुलुक रोया करती। तब निवेदक रेखा से कहता है कि- तुम रो-रो कर पड़ोस वालों को यह जताना चाहती हो कि तुम्हारे साथ यहाँ अत्याचार होत है। तुम सलाई जाती हो। यह सरासर अपमान है। अगर तुम्हें यही सब करना है तो यहाँ से चली जाओ। अभी। और रेखा रोना सुबकना भूल जाती। "उसका गला भर आता, आँखे डब डबा आतीं , ओठ फड़कने लगते। मगर डर के मारे उसकी आवाज न फूटती। रोने का मतलब था फिर झगड़ा।"9

कभी-कभी पति-पत्नी के बीच अर्थाभाव के कारण भी संघर्ष उत्पन्न हो जाते हैं। बिस्मिल्लाह की 'पशु' कहानी में निवेदक तथा बीना के बीच अक्सर झगड़े होते रहते हैं। निवेदक को आमदनी बहुत कम मिलती है। "चावल खतम हो गया है , ला दीजिए। वह महीने के बीच में ही कहती और मुझे क्रोध आ जाता।कहाँ से ला दूँ, क्या चोरी करूँ पूरी तनख्वह जब मैं ने तुम्हें दे दी तो तुम्हें उसी में एडजस्ट करना चाहिए।"10

बीना तुरंत उत्तर देती है कि "तो क्या तनख्वाह मैं खा गयी आपने तीन ही सौ रुपया दिया था। बताइए, मैं कौन सा फालतू खर्च किया।" 11

स्वभावतः स्त्रियाँ हमेशा नई साड़ी चाहती हैं। साडियों के वजह भी अक्सर पति-पत्नी के बीच झगड़ा होता रहता है। 'पशु' कहानी में इसका उदाहरण इस प्रकार है

"बीनू कहती है कि बताइए, तो आपने कितनी साड़ियाँ ला दी है मेरे लिए ? तब उसके पति तुरंत उत्तर देता है - जब मैं ने तुम्हारे लिए कुछ किया ही नहीं तो तुम क्यों रहती हो मेरे साथ ? जो तुम्हें ढ़ेर साड़ियाँ पहनाए उसी के पास चली जाओ।"12

'मुरीद' कहानी में दादाजी पीर साहब को सलामी देने के लिए पैसे माँगता है। दादी पैसे देने के बजाय व्यंग्य करती है। दादाजी क्रोध से उत्तर देता है कि - तुम सब यहाँ से निकलो। तुम लोगों को घर में रहने का कोई हक नहीं है। यह घर मेरा है। जब तक मैं कमाता रहा, किसी की बोली नहीं निकलती थी। गोश्त खा लिया, अब हड्डी बची तो फेंक दी, उठा कर। अब मेरी अहलियत नहीं है। अरे, अब भी जो पेट चल रहा है, वह मेरे घर की बदौलत ही। आखिर किराए का पैसा क्या होता है।13 दादी चीखने लगी थीं "बड़े आए किराये की धमकी देने वाले। ले लीजिए, हिसाब बीस रुपल्ली की।"14

'खुशी' कहानी में श्री बाबू तथा उसकी पत्नी जानकी के बीच पैसों के लिए झगड़ा होता है। श्री बाबू अपने पुराने दोस्त श्यमचरण जो एम.एल.ए बन चुके थे, उसे अपने घर खाना खाने के लिए बुलाता है। इसके लिए अनेक प्रकार के वस्तुओं का इन्तजाम करते हैं तथा तरह-तरह के पकवान बनाते। इसके लिए उन्हें पैसों का उधार लेना भी पड़ता है। पर श्यामचरण के न आने की खबर सुनकर उन दोनों की बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। जानकी कहती है कि- "ले आ गए न तुम्हारे एम.एल.एसाहब बड़े दोस्त वाले बनते थे। अब देखो....। मैं तिरलोकी-फिरलोकी स नहीं पूछती। मैं तो तुम से पूछती हूँ कि अब मैं मुहल्ले में क्या मुँह दिखाऊँगी। और उधार के ये जो सौ रुपए गले सो अलग। ये सब तुम्हारी दोस्ती और लाटसाहबी के चक्क में हुआ। अब बताओ इस खाने का क्या होगा। जाओ तुम्हीं खाओ अकेले बैठकर। और मुझे सौ रुपए लाकर दो अभी-चाहे जहाँ से लाओ।"15 जानकी की बातें सुनकर श्री बाबू कृद्ध हो जाते हैं तथा उसको पीटते हुए कहा "ले। और लेगी पैसा। ले। बोल और लोगी पैसा ? श्री बाबू अपनी पत्नी को अंधाधुंध पीट रहे थे और वह अपना सिर थामकर जमीन पर बैठ गई थी। उसके दाँतों से खून बह रहा था।16

इस प्रकार बिस्मिल्लाह की अनेक कहानियों में गरीबी, अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के कारण असफल दांपत्य संघर्षों का चित्रण मिलता है।

निष्कर्ष

पति-पत्नी का दायित्व होता है नई पीढ़ी को जन्म देना। यदि उन दोनों के बीच में सफल दांपत्य का अभाव है तो पारिवारिक संराचना खराब हो जाता है। पति-पत्नी के बीच में विश्वास, प्यार तथा त्याग की भावना हो तो उनका दांपत्य जीवन आनंदमय हो जाता तथा आगामी पीढ़ी का सृजन भी सुचारु रूप से चलता है। आत्मसमर्पण की भावना, प्यार, त्याग आदि भावनाओं से स्त्री-पुरुष अपने स्वार्थ को भूलकर एक दूसरे के लिए मर मिटाना चाहिए। तभी वह दांपत्य जीवन परिपूर्णता की ओर अग्रसर होती है।

संदर्भ सूची

1 देवेश कुमार और उनका उपन्यास साहित्य-डॉ.पांडुरंग पाटिल, पृ.75)
2 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल- अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ.275
3 ताकि सनद रहे, कितने-कितने सवाल- अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ.158
4 ताकि सनद रहे, कितने-कितने सवाल- अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ.158
5 ताकि सनद रहे, कितने-कितने सवाल- अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ.162
6 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 305
7 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 305
8 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 302
9 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 302
10 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 329
11 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 329
12 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 329
13 ताकि सनद रहे , कितने-कितने सवाल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 117
14 ताकि सनद रहे , जीनिया के फूल , अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 329
15 ताकि सनद रहे - रैनबसेरा, अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ.64
16 ताकि सनद रहे - रैनबसेरा, अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ.64